International Conference on
Recent Trends in Humanities, Education,
Arts, Culture, Languages, Literature, Philosophy,
Religion, Gender and Management Studies **(HEALM-2019)**

वैश्विक दृष्टी में महिला लेखन

डाक्टर सुनीता सिंह
असिस्टैंट प्रोफसर हिंदी
E-mail: sksinghsingh4146@gmail.com

लिंग आधारित भेद भाव और अस्वीकार असमानताएं सभी देशों में आज विधमान हैं I दुनिया का शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ महिलाएं पुरुषों के साथ समान अधिकार का उपभोग करती हों महिलाओं के साथ भेदभाव और उन्हें हाशिये पर कर दिए जाने का कार्य बड़ी दक्षता और सम्मानजनक तरीके से किया जाता रहा है I इस सन्दर्भ में अंतर्राष्टीय विधि में महिलाओं के अधिकारों की घोषणा की गयी जो भेदभाव न करने के सिधांत पर आधारित है I संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा महिलाओं पर चतुर्थ सम्मेलन बीजिंग में वर्ष २०९४ में आयोजित किया गया था यह सम्मेलन विश्व स्तर पर आयोजित दुनिया के विशालतम सम्मेलनों में से एक था I इस सम्मेलन का नारा था `दुनिया को महिलाओं की दृष्टि से देखो `

वैश्विक परिदृश्य में स्त्री विषयक चिंतन और लेखन में आत्मविस्थापन की पीड़ा देखी जा सकती है इन दिनों स्त्री रचनाकार सीरिया इराक और दुनिया के अनेक अस्थिर समाजों के मनुष्यों के बारे में गम्भीरता से लिख रही हैं । स्त्री लेखन आज अनुभूति की प्रमाणिकता को स्थापित कर रही हैं । प्रख्यात महिला लेखिका मृदला गर्ग ने कहा है कि स्त्री लेखन प्रमुखता प्राप्त कर रहा है । स्त्री अब धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, और व्यक्तिगत सभी रुढियों और मान्यताओं के विरुद्ध अधिक प्रतिरोध कर रही हैं उतर स्त्रीवाद में मातृत्व को एक शक्ति की तरह पहचाना जा रहा है । प्रख्यात अंग्रेजी विद्वान् सुकृता पल कुमार ने कहा है कि स्त्रियों ने अपनी भाषा और अपना निजी स्वर स्वयं आविष्कृत किया है । स्त्रिया न सिर्फ अपने मुद्दे बल्कि शोषित पीड़ित और हासिये के बहिस्कृत समुदाओं की समस्याओं को बहुत मानवीय संवेदना के साथ देख रही हैं ।

फ्रेडरिक एंगल्स ने अपनी बहुचर्चित किताब द ओरिजिन ऑफ द फैमिली प्राइवेट प्रॉपर्टी एंड स्टेट अट्ठारह सौ चौरासी में स्थापित किया है कि निजी संपत्ति के उदय और उस पर अधिकार की वंशानुगत व्यवस्था के क्रम में स्त्री की यौनिकता पर नियंत्रण प्रारंभ हुआ, जो कि उन पर पुरुष वर्चस्व को तय करने का कारण बना I यह नियंत्रण उनकी गत्यात्मकता पर रोक, उनकी यौनिकता पर नियंत्रण और इस क्रम में अपनी ही देह तथा समाज के सभी संसाधनों (आर्थिक तथा सासांस्कृतिक) से उसका वंचन करता है I स्त्रियों के लेखन में इसी वंचन से टकराव, उनका निषेध, केंद्रीय विषय रहा है I उन्नसवीं शताब्दी की भारतीय महिला लेखन सावित्री बाई फूले, ताराबाई शिंदे और रुकैया सखाबत की साहित्यिक अभिव्यक्ति के केंद्र में इस वंचना से लड़ना ही केन्द्रीय तत्व में रहा है I परिवार, विवाह, विवाह

के भीतर संबंध, विवाह के बाहर स्त्री पुरुष के रिश्ते आदि महिला लेखन के प्रमुख विषयों में रहे हैं I खासकर प्रारंभिक दौर में हिंदी का महिला लेखन उन मध्यमवर्गीय महिलाओं का लेखन रहा है जो निषिद्ध शिक्षा का स्वाद चख चुकी थी गांवों से नगरों का मध्यम वर्गीय जीवन शिफ्ट हुआ था I उन्हें अपने पूर्वजों की तरह रसोई में बंद चौखट के भीतर लेखन की बाध्यता नहीं थी, ये बाहरी संसार में आवाजाही कर रही थीं I इसी तरह स्वातंत्रोत्तर महिला लेखन के विषय में परिवार के दायरे में स्त्री पुरुष समानता से बढ़ते हुए परिवार और विवाह के बाहर स्त्री पुरुष संबंध बिखरते संबंधों के प्रभाव, उसके मनोविज्ञान बाहर भीतर का द्वंद आदि रहे जो धीरे धीरे देहमुक्ति अर्थात देह पर अपने अधिकार जैसे विषयों को शामिल कर अधिक बोल्ड होते गए चूंकि कवयित्री लेखिका अनामिका के शब्दों में `देह ही स्त्री शोषण का प्राइम साइट है` इसलिए लाजिम था कि देह के सवाल हिंदी महिला लेखन का केन्द्रीय सवाल बनता खासकर तब जब हिन्दी समाज की महिलाएं वर्जित प्रदेशों में प्रवेश कर चुकी थी I वर्जित प्रदेशों से तात्पर्य शिक्षा साहित्य उस हर संसाधन से है जिनसे स्त्रियाँ नियन्त्रण के कारण वंचित रह गई थी I यथार्थवादी स्त्री लेखन के सपनों के समावेश से उनके कथा संसार से नया आयाम मिला, जो खासकर उन्नीस सौ पचास (१९५०) के बाद छिपी इच्छाओं और विसाती भय को उनके केंद्र में ला सका यह बात.जितना इटली और यूरोप के महिला लेखन के संदर्भ में ओरियाना पेल्सी के हवाले से सत्य है उतना ही हिन्दी के महिला लेखन के संदर्भ में भी है I

लेखिकाओं की लेखकीय सक्रियता को समय के आधार पर २० वीं शताब्दी के बाद की कहानियां और २१ वीं शताब्दी के पहले दशक में लिखी गई कहानियों का कथा कैनवास लगभग एक सा है I इस शोधो आलेख में मेरा प्रयास है कि मैं इन कहानीकारों की और इनकी कहानियों की एक खास कालखंड में उपस्थिति को समझ सकूं और इनके कथा वितान के माध्यम से महिला लेखन की नई पीढ़ी के विकास को समझ सकूं I गीतांजलि श्री, अल्पना मिश्रा, जयश्री राय, मनीषा कुलश्रेष्ठ और अनीता भारती के कथा संग्रह क्रमश यहां `हाथी रहते थे` I `कब्र भी कैद और जंजीरें भी` I `तुम्हें छू लूँ जरा` I `बंदर भगा था` और एक थी कोठे वाली` तथा अन्य कहानियां हिंदी कथा साहित्य की युवा पीढ़ी की लेखिकाओं के लेखन का प्रतिनिधित्व करती है I इस शोधो आलेख में इन कुछ कथा संग्रहों के जरिए महिला लेखन में परिवार विवाह और स्त्री यौनिकता तथा विकास और राजनीति के सवाल को दो अलग अलग खण्डों में देखने का प्रयास कर रही हूं I इस क्रम में निजी और सार्वजनिक दोनों दायरे के महिला लेखन किस रूप में अभिव्यक्त हो रहा है स्पष्ट हो जाएगा I

महिला लेखन में देह मुक्ति और यौनिकता के सवाल पर रुकाया सखाबत हुसैन अधिक स्पष्ट और यथार्थवादी लेखन कर चुकी हैं I `वर्जित सुख` शीर्षक कहानी में जयश्री की नायिका विवाह से बाहर अपने व्यक्तित्व को आकार लेने से सुखी जरूर है I उसे अपने खो चुके व्यक्तित्व का अर्थ मिल जाता है लेकिन खुद के द्वंद में घिर जाती है I उसे प्रेमी के नंगी पीठ में पति की चौडी छाती दिखती है I वह अपराध बोध से घिर जाती है, जिससे उसे मुक्ति तभी मिलती है जब वह विदेश में देर रात को पति के फोन पर एक महिला की नींद में डूबी आवाज और बगल से पति की झल्लाहट सुनती है I कुछ इसी तरह की यौनिकता पर बहस अन्य महिला लेखिकाओं की कथाओं में देखा जा सकता है I अल्पना मिश्रा की नायिका बचपन से यौन शोषण के शिकार हैं या साथी रिश्तेदार पुरुषों की यौन कुंठा से प्रताड़ित है I उनके साथ या उनके जैसों के साथ जीने के लिए विवश भी हैं I `छावनी में बेघर` की कहानी मुक्ति प्रसंग की अध्यापिका अपनी यात्रा

ISBN: 978-93-85822-88-9

में स्त्री देह के पर प्रति निगाहों के छुवन से गुजरती है I इसी तरह की परिस्थिति अन्य कथा लेखिकाओं में भी मिलती है I पितृसत्तात्मक समाज के संश्लिष्ट संरचना और उसके प्रभावों के प्रति पूरी सजग हैं I इसलिए वे महिला लेखिकाएं अपने पात्रों के साथ गहरी संवेदना से जुड़ी हैं I आक्रोश और बदले के भाव से मुक्त बीस सौ बारह (२०१२) तक आते आते उनकी कहानियां उन द्वंदों से भी मुक्त हुई हैं I

विकास और राजनीति के सवाल पर भी महिला रचनाकारों की कथा में इन सरोकारों के प्रति आश्वस्त करती है I गीतांजलि श्री के कथा संग्रह `यहां हाथी रहते थे` कलात्मक शिल्प और भाषा के स्तर पर अलग कहानी है I यथार्थ और जादुई यथार्थ के मिश्रण के साथ अपने समय के जटिल यथार्थ को अभिव्यक्तकरती है I वहीं मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी `स्वांग` कहानी कलाकार की त्रासदी के बहाने सांस्कृतिक बहुलताओं के नष्ट होने की कथा कहती है I अनीता भारती की `कहानियां राजनीतिक संदेश की कहानियां हैं I ये कुछ कहानियों के माध्यम से हिन्दी महिला रचनाधर्मिता को समझने की एक कोशिश मात्र है I हिंदी में महिला लेखन को एक खास सीमा तक समझा जा सकता है I इनकी रचना धर्मिता किसी रियासत की मांग नहीं करती रचनाओं को आरक्षण नहीं दियाजा सकता I इनकी कहानियों में स्त्री पुरुष के अस्तित्व की जटिलताएं अपने पूरे स्वरूप में उपस्थित होती है I महिला लेखन एक सामाजिक सच्चाई और अस्मिता के संघर्ष की चुनौती के रूप में सामने आता है I यह स्त्री के अपने नजरिए से स्त्री लेखनका नया अध्याय है I साहित्य में स्त्री विमर्श अस्मिता का वह आंदोलन है जो हाशिए पर छोड़ दिए गए नारी अस्तित्व को फिर से केंद्र में लाने और उसकी मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का अभियान है I यह साहित्य स्त्री को सामाजिक संरचना में दूसरे दर्जे में रखने का मुखर विरोध और स्त्री को एक जीवंत मानवीय इकाई के रूप में स्वीकार करता है I दुनिया के सभी समुदायों सभ्यता धर्म वर्ग और जाति में पितृ सत्ता किसी न किसी रूप में मौजूद रही हैं I सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व्यवस्था और मूल्यों, मर्यादाओं, आदर्शों और संस्कारों के विभिन्न रूपों के जरिए पुरुष को स्त्री की तुलना में श्रेष्ठ स्थापित किया गया है I स्त्री शोषण को सहज और स्वाभाविक मान्यता के रूप में समाज के मन मस्तिष्क में बैठाने की निरंतर कोशिश की गई I

पश्चिम में स्त्री विमर्श करने का श्रेय सिमोन द बुआ को जाता है जिन्होंने `द सेकेंड सेक्स` लिखकर पितृसत्तात्मक समाज में तहलका मचा दिया और परंपरागत सामाजिक संरचना को चुनौती दे डाली उन्होंने माना कि स्त्री पैदा नहीं होती उसे बनाया जाता है I स्त्री अस्तित्व और समाज के दमन चक्र में उसकी उपेक्षा शोषण, उसकी स्वतंत्रत मानसिकता पर पुरुष का अधिकार जिन नियमों और मान्यताओं के रूप में आरोपित किए गए हैं वह चिंतन उसके प्रति विद्रोह और मुक्तिविमर्श और आंदोलन बन कर सामने आया I उन्नीस सौ पचहत्तर (१९७५) में अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित हुआ भारत के संदर्भ में भी इसे ऐतिहासिक काल कहा जा सकता है I स्त्री शिक्षा का सभी क्षेत्रों में विकास हुआ I अधिकारों की मांग बढ़ी और आत्माभिव्यक्ति के लिए क्षुब्ध और छटपटात हृदय ने साहित्य को माध्यम बनाया I राजनीति और समाज के सभी क्षेत्रों में जब महिला सशक्तिकरण का दौर शुरू हुआ तो साहित्य की दुनिया में भी यह एक महत्वपूर्ण घटना घटी I महिला लेखन के केंद्र में स्त्री अस्मिता का संघर्ष, अदम्य जिजीविषा, स्वतंत्र देह, देह और यौन उत्पीड़न के प्रति विद्रोह और स्वयं की पहचान के प्रति जागरूकता के साथ सामाजिक पहलुओं से जुड़े यथार्थ को भी देखा गया I मानवीय संवेदना की गहरी पड़ताल करते हुए सभी वर्ण वर्ग और जाति की

ISBN: 978-93-85822-88-9

स्त्रियों की अंतरआत्मा का अवलोकन कर के ये स्त्री रचनाएं पाठकों को स्तब्ध और उद्वेलित कर देती हैं i स्त्री लेखन नारी शोषण के विरुद्ध परिवर्तन और क्रांति के साथ समकालीन साहित्य में सशक्त हस्ताक्षर भी है I

वर्तमान स्त्री लेखन स्वतंत्रता समानता और न्याय जैसी मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्षरत और सक्रिय स्त्री रचनाकार स्त्री हितों की चर्चा करने लगी हैं और अपनी अस्मिता को पहचान रही है I प्रभा खेतान का कहना है कि इतिहास में पहली बार यह घटना घट रही है I स्त्री पहली बार पितृसत्ता को नकार रही है I लेखिकाओं ने अपनी पहचान स्थापित करते हुए बंधनों को तोड़ा और स्त्री नैतिकता सहनशीलता और त्याग जैसे थोपे हुए मूल्यों को नकार दिया और उसकी स्वतंत्रता अस्मिता को समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई मान कर स्त्री मुक्ति का मुख्य मुद्दा बनाया है I स्त्री चेतना को केवल भावनात्मक कसौटी पर नहीं बल्कि बौद्धिकता के मानदंड पर स्त्रियों ने साहित्य को परखा है I यह बौद्धिकता विद्रोह के रूप में और स्त्री के प्रति पितृ सत्तात्मक मानसिकता की संकीर्ण और क्षुद्र सोच के प्रखर विद्रोह पर आधारित है I समकालीन परिदृश्य में असंख्य स्त्री रचनाकार स्त्री के सच और स्वप्न को जिस यथार्थवादी दृष्टिकोण गहराई प्रामाणिकता और विश्वसनीयता से लिख रही हैं इनके लेखन के केंद्र में स्त्री जीवन की ज्वलंत और भयावह समस्याएं हैं I मर्यादाओं की तीक्षड आलोचना है I वर्जीनिया वुल्फ ने कहा है स्त्री का लेखन स्त्री का लेखन होता है I स्त्री वादी होने से बच नहीं सकता I अपने सर्वोत्तम में यह स्त्रीवादी ही होगा I इस अर्थ में हिंदी का स्त्रीवादी साहित्य स्त्री को व्यवस्था की गुलामी से मुक्त करके उसे एकआत्म निर्णायक, स्वतंत्र व्यक्ति की अस्मिता के रूप में स्थापित करने का महत्वपूर्ण और सार्थक प्रयास है I आज विभिन्न देशों के साहित्य अकादमी द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में लेखिका सम्मानों का आयोजन किया जा रहा है जिससे महिला लेखन को बड़ा फलक प्राप्त हो सके I स्त्रियां आज पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं यह सिर्फ कहने की बात रह गई है I बल्कि स्त्रियों ने साबित भी कर दिया है I निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अभी भी लक्ष्यों की प्राप्ति पूर्ण रूप से नहीं हो सकी है फिर भी महिलाओं के प्रति व्याप्त असमानता में कुछ कमी अवश्य आई है परन्तु वैश्विक स्तर पर इस दिशा में और प्रयास किए जाने की जरूरत है I

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. स्त्री शतक पवन करुण पृष्ठ २४,२८,२७,५६
२. द सकेंड सेक्स सिमोन बोउया प्रारंभिक पेज ३७ तक
३. द आरिजिन फेडरिक एंगल्स
४. हाथी यही रहते थे अनीता भारती कथा संग्रह
५. वर्जित सुख जय श्री
६. https/aajtak. Intoday.in>story
७. www.vniprakashan.in

ISBN: 978-93-85822-88-9